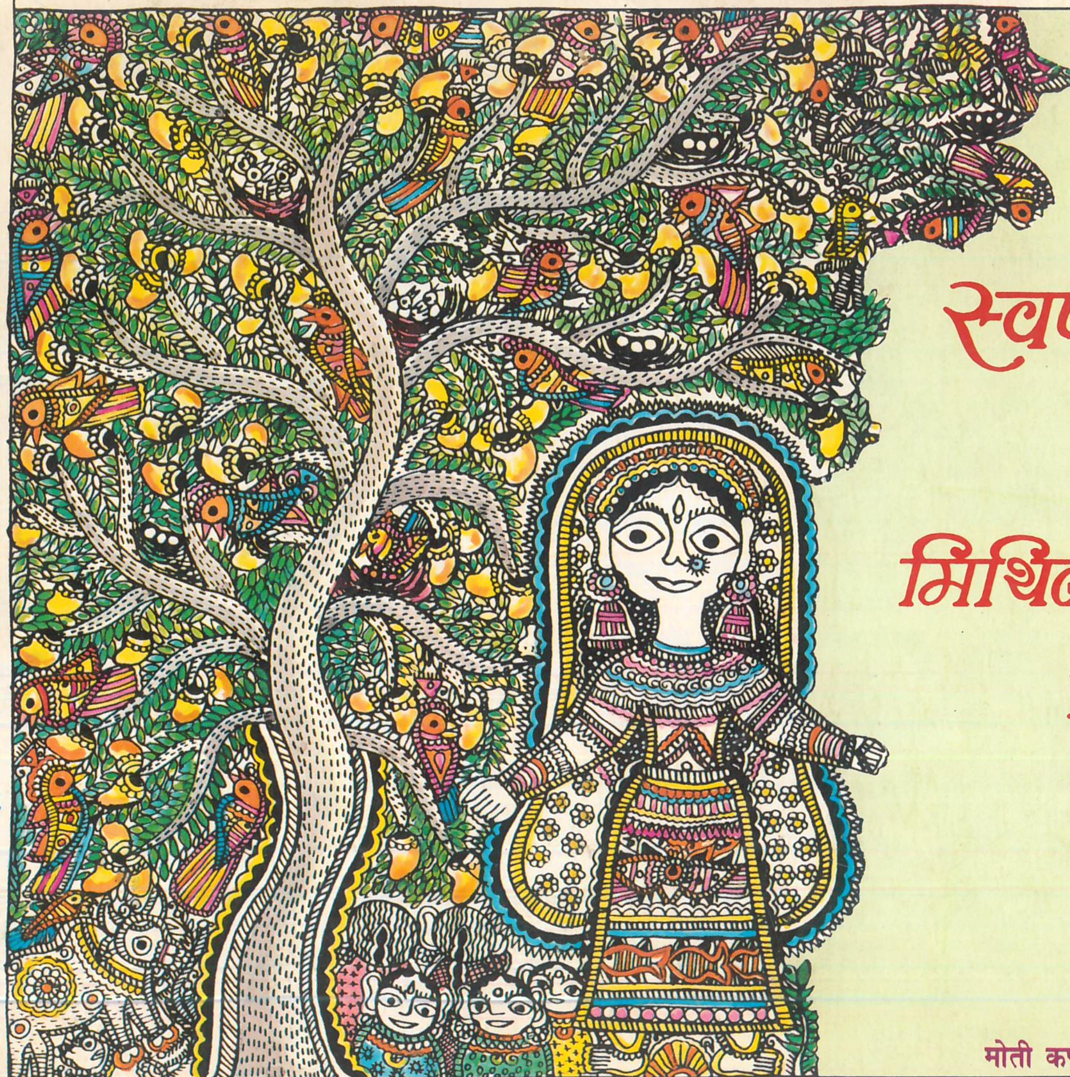


क
जल्दी कृति

स्वप्नसुन्दरी और मिथिला की जादुई चिड़ियाँ

गीता धर्मराजन

रूपांतरण
दिनेश शर्मा

रेखाचित्र
मोती कर्ण एवं सत्यनारायण लाल कर्ण

सपनों को साकार करने में मेरे साथ जुटे हुए, कथा परिवार के सभी कर्मठ सदस्यों को समर्पित ! – गीता धर्मराजन

रंग सज्जा
अरविन्दर चावला एवं पूनम जोशी

दिनेश शर्मा : रूपांतर एवं सम्पादन
सुरेश शर्मा : डी.टी.पी संचालन
एस. गणेशन : व्यवस्थापन
अरविन्दर चावला : परिकल्पना
पूनम जोशी : वरिष्ठ कलाकार
चमन सैनी : कनिष्ठ कलाकार
सरनाम, हरस्वरूप, राजू : कार्यालय सहायक

प्रकाशक
कथा
बिल्डिंग सेन्टर, सराय काले खाँ, निजामुद्दीन (पूर्व) नई दिल्ली 110 013
दूरभाष : 4628227, 4628254 फैक्स : 4643998

प्रथम प्रकाशन कथा द्वारा, जनवरी 1996

ISBN 81-85586-47-0



हुत साल पहले मिथिला के खुशहाल देश में, स्वप्नसुन्दरी नाम की एक सुन्दर राजकुमारी रहती थी। नन्हीं राजकुमारी को गाने वाली चिड़ियों से, बहुत प्यार था।

उसने अपने सुन्दर बाग में, बहुत सारी चिड़ियाँ पाल रखी थीं। वह किसी भी चीज़ को देखती तो वह गाती हुई, रंग-बिरंगे पंखों वाली चिड़िया में, बदल जाती।

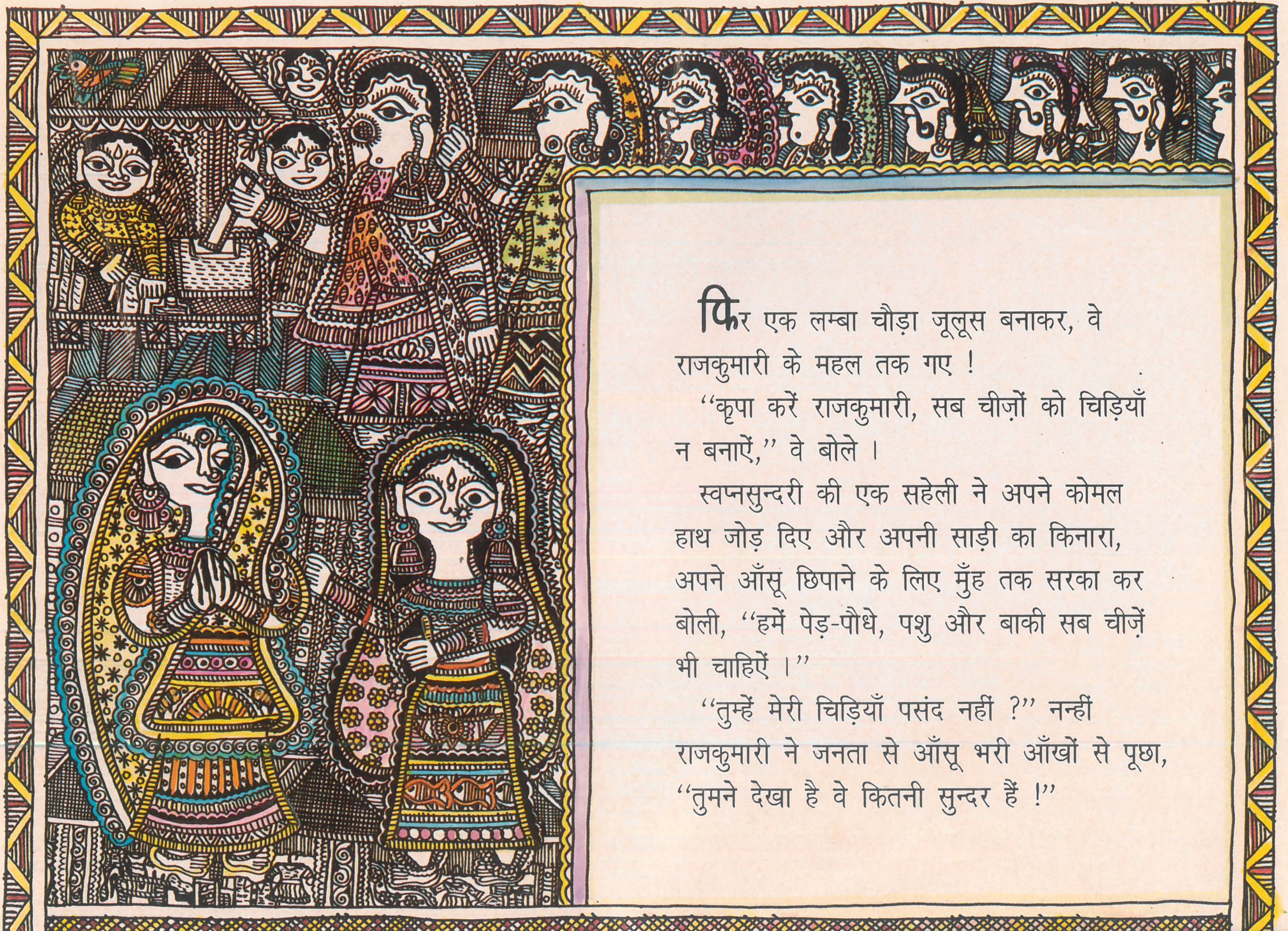



उसके देश के लोग बहुत मेहनती थे। उस राज्य में नदियाँ साफ़-सुथरी और कुँए पानी से, लबालब भरे थे।
वे और अधिक खुशहाल हो सकते थे। परन्तु ... नन्हीं राजकुमारी स्वप्नसुन्दरी उनके पास आती और ... छूमंतर !
चावल, बकरी या मछली, गाय, किताब या गुड़िया,
एक पल में सब बन जाते थे, गाने वाली चिड़िया !

"मजा आ गया !" स्वप्नसुन्दरी चिल्लाई ।
"देखो ! चिड़ियाँ, सब ओर सुन्दर चिड़ियाँ !"
लेकिन लोग बहुत उदास थे ।

"हम चिड़ियों का क्या करेंगे ? क्या उन्हें खा सकते हैं ? या पढ़ सकते हैं ? या फिर उनके साथ खेल सकते हैं ?" वे पूछते रह गए ।





फिर एक लम्बा चौड़ा जूलूस बनाकर, वे राजकुमारी के महल तक गए !

"कृपा करें राजकुमारी, सब चीज़ों को चिड़ियाँ न बनाऐं," वे बोले ।

स्वप्नसुन्दरी की एक सहेली ने अपने कोमल हाथ जोड़ दिए और अपनी साड़ी का किनारा, अपने आँसू छिपाने के लिए मुँह तक सरका कर बोली, "हमें पेड़-पौधे, पशु और बाकी सब चीज़ें भी चाहिऐं ।"

"तुम्हें मेरी चिड़ियाँ पसंद नहीं ?" नन्हीं राजकुमारी ने जनता से आँसू भरी आँखों से पूछा, "तुमने देखा है वे कितनी सुन्दर हैं !"

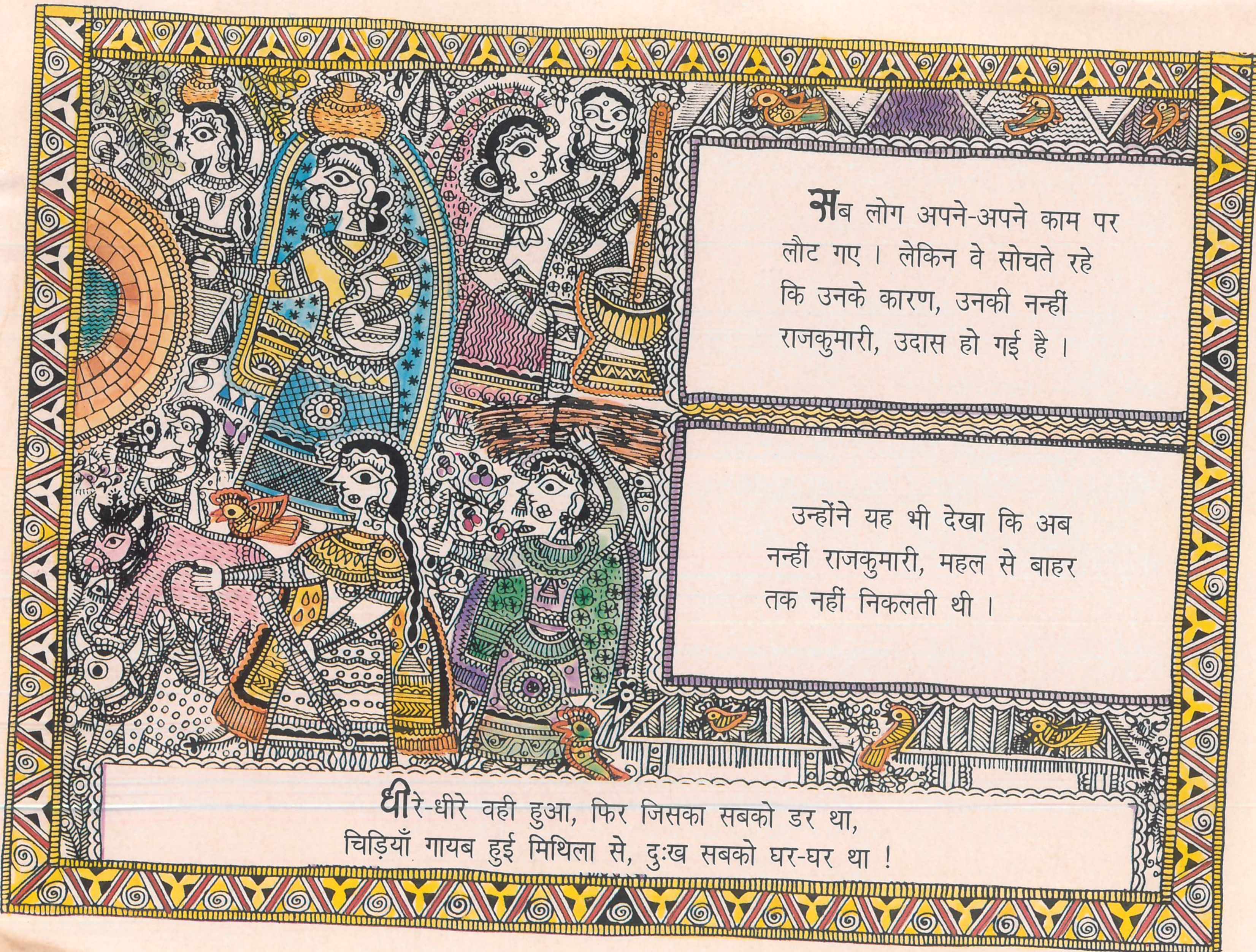




लड़कों की ओर देखो !'' नन्हीं राजकुमारी बोली, ''इन गानेवाली जादुई चिड़ियों के कारण ही, वे पढ़ाई-लिखाई में आगे हैं !''

''शायद,'' मिथिला के लोग अनमने से बोले, ''लेकिन केवल चिड़ियाँ सब कुछ नहीं हैं ।''

अगर तुम लोगों को चिड़ियाँ अच्छी नहीं लगतीं, तो मैं आगे से कभी चिड़ियाँ नहीं बनाऊँगी,'' नन्हीं राजकुमारी, उदास होकर बोली ।


सब लोग अपने-अपने काम पर लौट गए। लेकिन वे सोचते रहे कि उनके कारण, उनकी नन्हीं राजकुमारी, उदास हो गई है।
उन्होंने यह भी देखा कि अब नन्हीं राजकुमारी, महल से बाहर तक नहीं निकलती थी।
धीरे-धीरे वही हुआ, फिर जिसका सबको डर था,
चिड़ियाँ गायब हुईं मिथिला से, दुःख सबको घर-घर था !

औरतें, खेतों में काम करते हुए, अब भी गाती थीं। पर सब जानते थे कि बिना गाने वाली, रंग-बिरंगी चिड़ियों के मिथिला, अब पहले जैसा नहीं रहा।

"चिड़ियों के कारण, हम खुशहाल थे," औरतें अक्सर कहतीं।

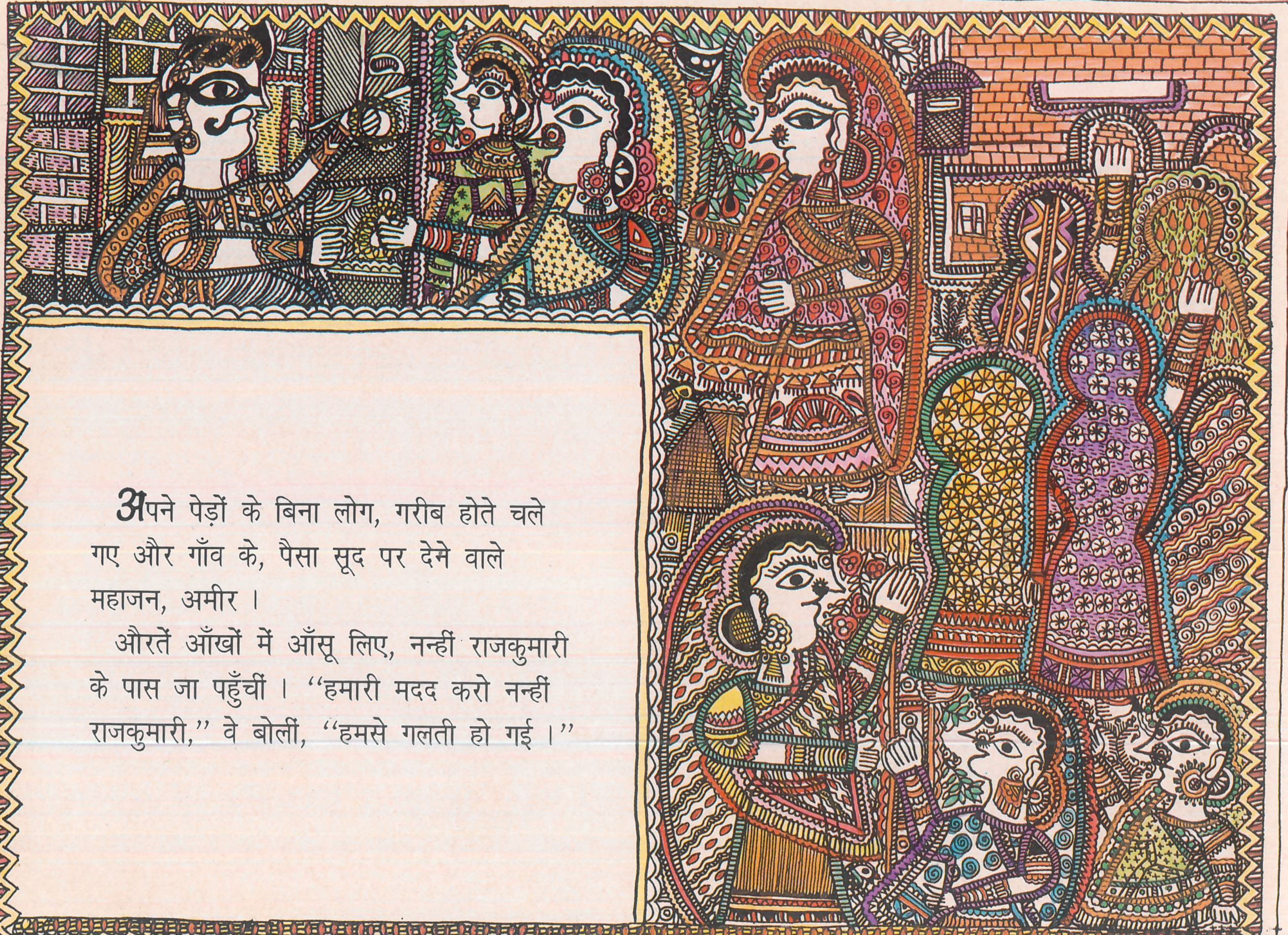


नर-नारी और बाल बालिका, चरवाहे, लोहार,
एक ही चिड़िया ढूँढ के लाए, थक कर मानी हार!

बिन चिड़ियों के, पेड़ों का क्या काम ?" कुछ चतुर लकड़ी के सौदागरों ने सोचा । और फिर रात में, उन्होंने सारे पेड़ काट डाले !

औरतों ने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की, मगर ... जल्दी ही बिना पेड़ों के, नदियाँ सूख गईं, जानवर कमज़ोर हो गए ।

गाने वाली चिड़ियों तुम, फिर वापिस आ जाओ,
ऐसा हम क्या कहें, कि तुम फिर मिथिला आ पाओ ।



अपने पेड़ों के बिना लोग, गरीब होते चले गए और गाँव के, पैसा सूद पर देने वाले महाजन, अमीर ।

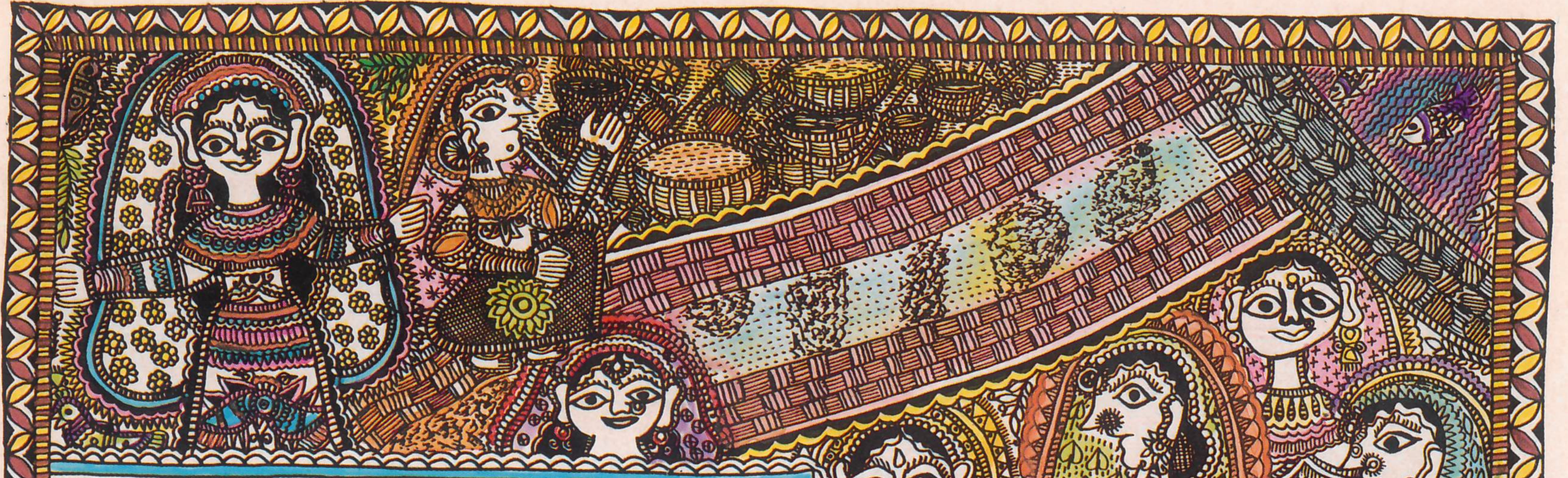
औरतें आँखों में आँसू लिए, नन्हीं राजकुमारी के पास जा पहुँचीं । ''हमारी मदद करो नन्हीं राजकुमारी,'' वे बोलीं, ''हमसे गलती हो गई ।''

स्वप्नसुन्दरी, चिड़ियों के चित्रों से सजे कमरे में, बैठी थी।

वह धीरे से बोली, "गलती तो मैंने भी की है। केवल चिड़ियाँ तुम्हें खुशी नहीं दे सकतीं।"

"लेकिन उनके बिना भी हम खुश नहीं है!" औरतों ने कहा।

"हमारी चिड़ियों को वापिस ले आओ, नन्हीं राजकुमारी।"





लेकिन नन्हीं राजकुमारी, इतनी उदास थी कि कोई जादू न कर पाई ।

"कोई बात नहीं, हम कुछ करेंगी," औरतों ने कहा । "हम पेड़ लगाऐंगी फिर गाने वाली चिड़ियाँ अपने आप लौट आऐंगी ।"

"हम तुम्हारी मदद करेंगे" आदमी बोले ।

"और हम किसी को बेईमानी नहीं करने देंगे !" नन्हीं राजकुमारी और औरतें एक साथ बोल पड़ीं ।

पूरे देश में उत्सव सा छा गया। उन महीनों में, सब लोगों ने मिलजुलकर, बहुत मेहनत की।

वे पौधे लगाते हुए, नाचते और गाते जाते, पानी देते हुए, हँसते और खिलखिलाते रहते और देखते ही देखते, सारे पेड़ लम्बे चौड़े और बड़े हो गए।

मिलकर काम करने में उन्हें बहुत खुशी हुई और शायद इसलिए उनके पेड़ जल्दी-जल्दी, अच्छी तरह बड़े हो गए।





जल्दी ही सैकड़ों हरे-हरे, छोटे-बड़े, हँसते हुए पेड़-पौधे, स्वप्नसुन्दरी के देश में निकल आए। जादुई संगीत हवा में बस गया।

एक दिन राजकुमारी स्वप्नसुन्दरी, शर्माती हुई औरतों से बोली, "मैंने हमेशा एक सपना सँजोया है। हमारे देश की लड़कियाँ पाठशाला जाकर पढ़ें। काश ! मैं भी पढ़ने गई होती। तो कहीं अधिक बुद्धिमान होती।"

औरतें उसकी बात सुनकर, कुछ पल चुप रहीं, "अगर हम पढ़ने गई होतीं, तो सूद खोर महाजन, हमसे बेईमानी न कर पाता।" एक औरत बोली।

"हम ज़रूर पाठशाला जाऐंगी !" लड़कियाँ बोलीं।



लेकिन बहुत सी माताऐं कहने लगीं, "लड़कियों को घर में काम करना है। पानी भरना है। लकड़ी लानी है, वो पढ़ने कैसे जा सकती हैं।"

"तुम ठीक कह रही हो।" नन्हीं राजकुमारी बोली, फिर वह चहक उठी।



इस देश में, लड़के वो सब सीखेंगे, जो लड़कियाँ करती हैं और लड़कियों को, लड़कों का काम सीखना होगा ! मिलजुलकर काम करने में, सबको बहुत मजा आऐगा।"



और हर पढ़ने वाली लड़की को, स्वप्नसुन्दरी की ओर से, एक भेंट मिली - एक साईकिल !

"संसार भर में जो लोग, एक जगह से दूसरी जगह जल्दी पहुँच पाते हैं, खुश हैं । क्योंकि वे जल्दी-जल्दी काम, निपटा पाते हैं ।" नन्हीं राजकुमारी ने समझाया ।

"हम भी साईकिल चलाऐंगी !" कुछ औरतें कहने लगीं । "चला सकती हैं ना ?"

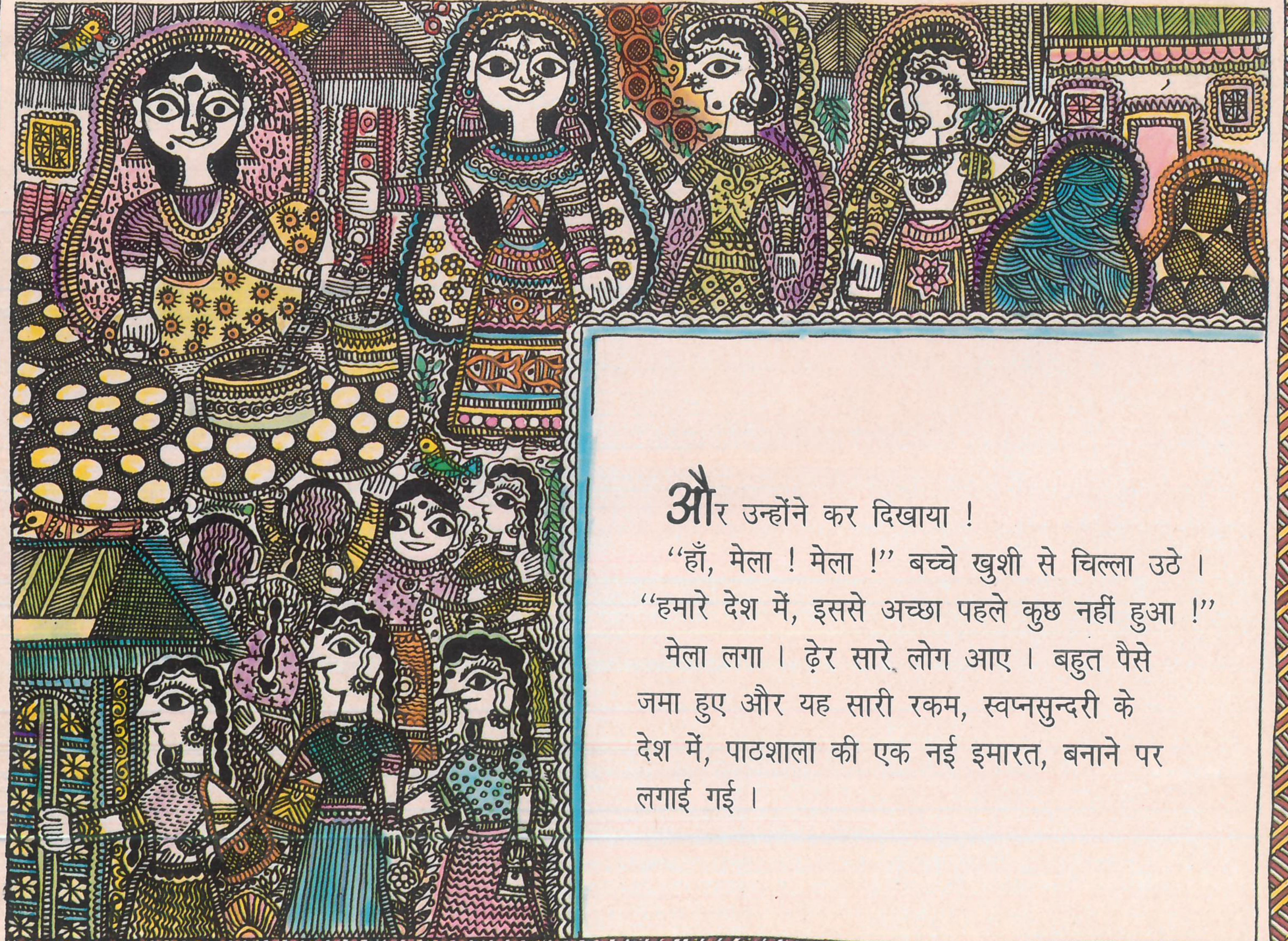
"हाँ हाँ क्यों नहीं," स्वप्नसुन्दरी बोली, "औरतों को वो सब करना चाहिए जो वो करना चाहती हैं ।"



लेकिन अगर सब पढ़ने आ गये, तो उनके लिए जगह कहाँ से आऐगी," एक अध्यापिका ने पूछा। "स्वप्नसुन्दरी कृपा कर कुछ करो।"

"लेकिन हर बार राजकुमारी ही, हमारी समस्याएँ क्यों सुलझाए ?" लोग कहने लगे, "हम कुछ न कुछ कर लेंगे !"

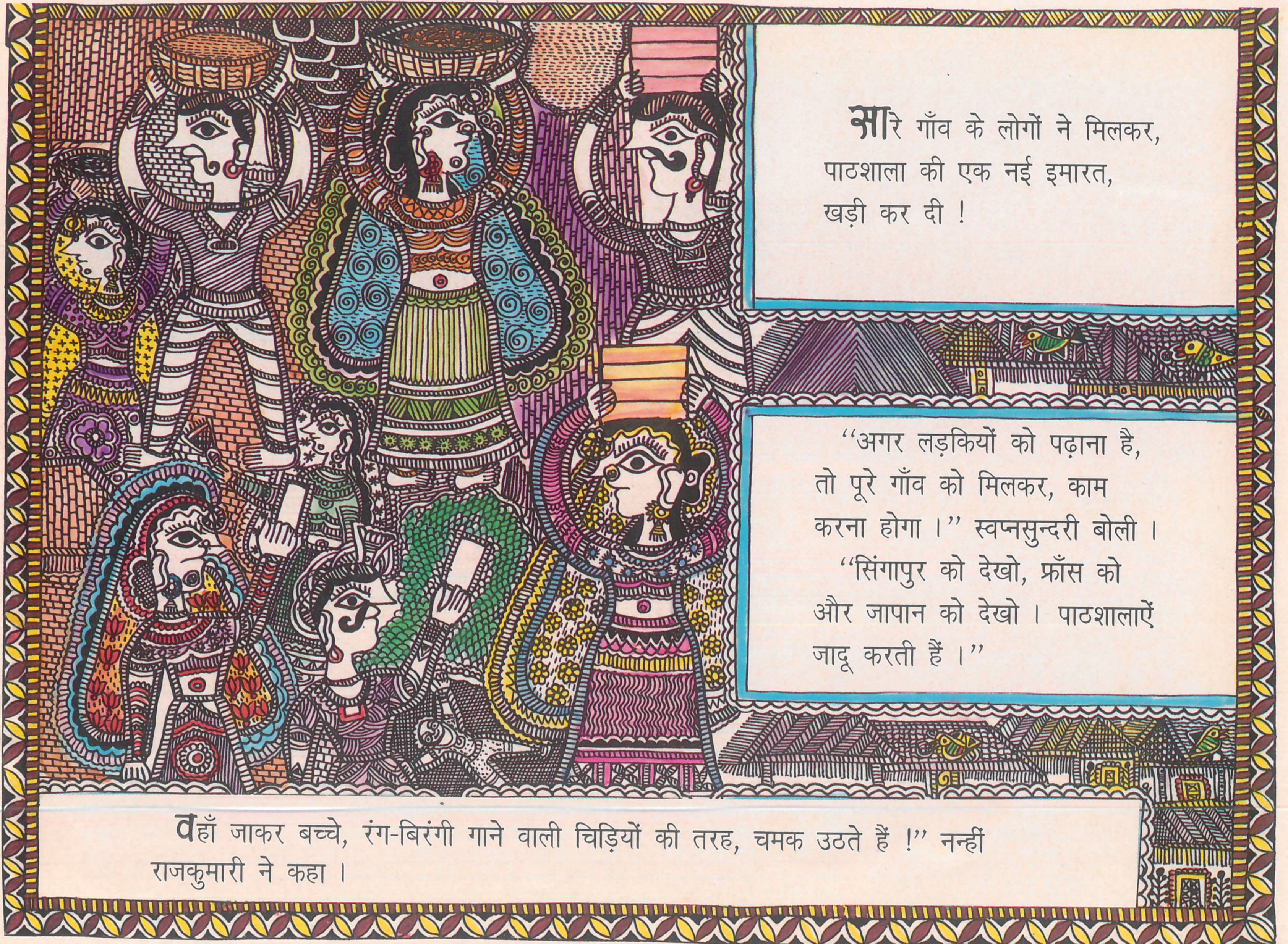




और उन्होंने कर दिखाया !

"हाँ, मेला ! मेला !" बच्चे खुशी से चिल्ला उठे । "हमारे देश में, इससे अच्छा पहले कुछ नहीं हुआ !"

मेला लगा । ढ़ेर सारे लोग आए । बहुत पैसे जमा हुए और यह सारी रकम, स्वप्नसुन्दरी के देश में, पाठशाला की एक नई इमारत, बनाने पर लगाई गई ।


सारे गाँव के लोगों ने मिलकर, पाठशाला की एक नई इमारत, खड़ी कर दी !
"अगर लड़कियों को पढ़ाना है, तो पूरे गाँव को मिलकर, काम करना होगा।" स्वप्नसुन्दरी बोली। "सिंगापुर को देखो, फ्राँस को और जापान को देखो। पाठशालाऐं जादू करती हैं।"
वहाँ जाकर बच्चे, रंग-बिरंगी गाने वाली चिड़ियों की तरह, चमक उठते हैं !" नन्हीं राजकुमारी ने कहा।

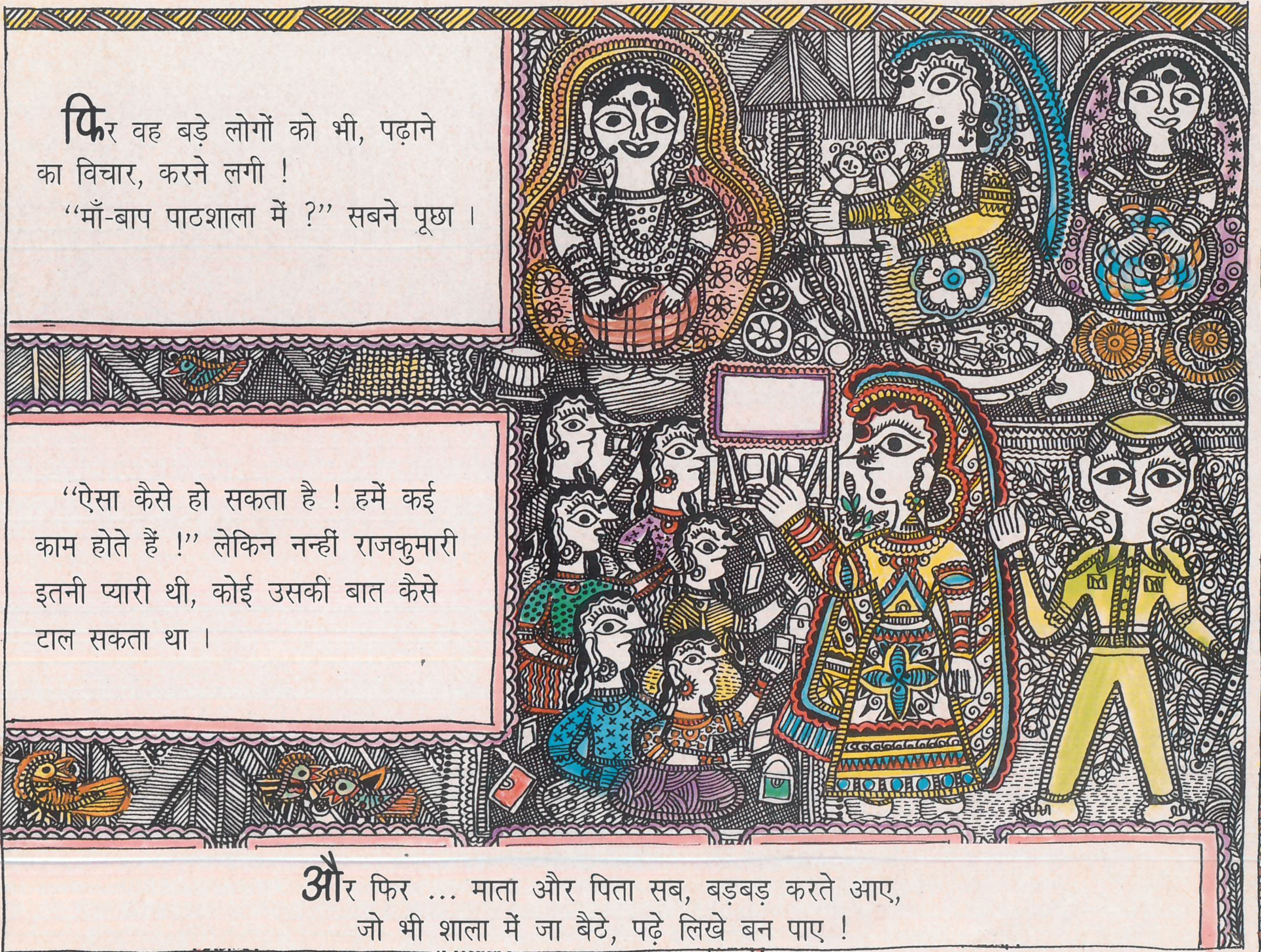
नन्हीं राजकुमारी के देश में, सब खुश थे ।

''तुम भी क्यों नहीं पाठशाला आतीं, ''लड़कियों ने एक दिन राजकुमारी से पूछा ।

''मैं ? पाठशाला ?'' स्वप्नसुन्दरी ने आश्चर्य से कहा । पर उसे यह यह बात पसंद आई ।

एक दिन वह पाठशाला आ गई । फिर अगले दिन भी ... फिर वह रोज आने लगी !





फिर वह बड़े लोगों को भी, पढ़ाने का विचार, करने लगी !
"माँ-बाप पाठशाला में ?" सबने पूछा ।

"ऐसा कैसे हो सकता है ! हमें कई काम होते हैं !" लेकिन नन्हीं राजकुमारी इतनी प्यारी थी, कोई उसकी बात कैसे टाल सकता था ।

और फिर ... माता और पिता सब, बड़बड़ करते आए,
जो भी शाला में जा बैठे, पढ़े लिखे बन पाए !



स्वप्नसुन्दरी ने देखते ही देखते,
सब बेकार पड़ी चीज़ों को बना दिया,
चिड़ियाँ — जादुई चिड़ियाँ ।

इन चिड़ियों का, अपना एक
चमत्कार था, हर एक की चोंच में,
एक-एक हजार पुस्तकें थीं ।
"बिना ज्ञान के सुन्दरता, सूखी नदी
समान है," वे चीं-चीं कर, गा रही थीं ।

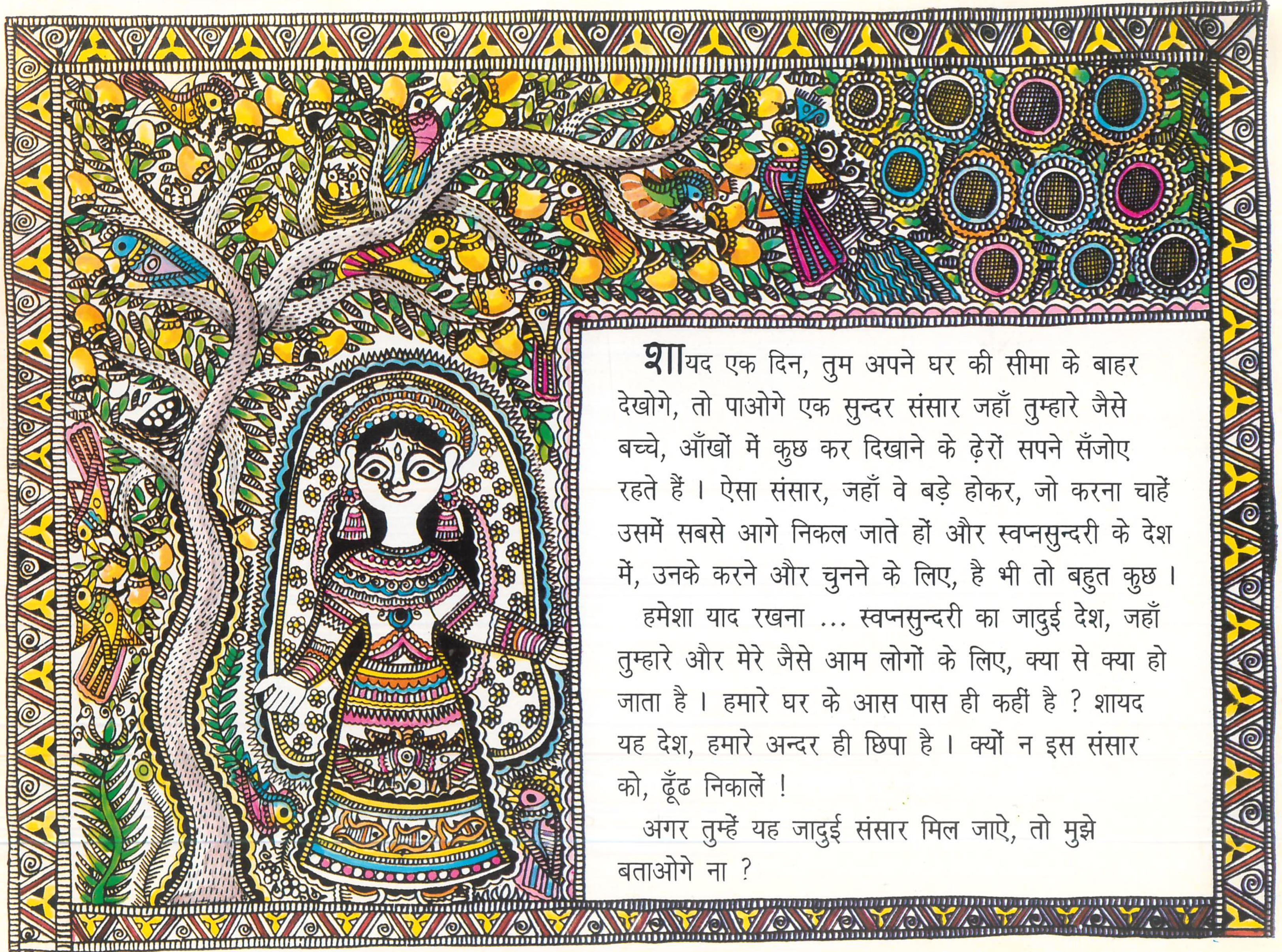
हरी पुस्तकें, लाल पुस्तकें, सबक सिखाऐं सभी पुस्तकें,
कभी हंसाऐं, कभी रूलाऐं, रंग-बिरंगी सभी पुस्तकें !



जल्दी ही नन्हीं राजकुमारी का देश, संसार भर का सबसे हरा-भरा, सुन्दर और खुशहाल देश बन गया। जहाँ रंग-बिरंगे पंखों से सजी, गाने वाली, सबसे सुन्दर चिड़ियों के, गीतों का जादू छाया रहता था।

लोग कहते कि नन्हीं स्वप्नसुन्दरी के देश में, खुशहाली का जादू, इन चिड़ियों के ही कारण बसा है।





शायद एक दिन, तुम अपने घर की सीमा के बाहर देखोगे, तो पाओगे एक सुन्दर संसार जहाँ तुम्हारे जैसे बच्चे, आँखों में कुछ कर दिखाने के ढ़ेरों सपने सँजोए रहते हैं। ऐसा संसार, जहाँ वे बड़े होकर, जो करना चाहें उसमें सबसे आगे निकल जाते हों और स्वप्नसुन्दरी के देश में, उनके करने और चुनने के लिए, है भी तो बहुत कुछ।

हमेशा याद रखना ... स्वप्नसुन्दरी का जादुई देश, जहाँ तुम्हारे और मेरे जैसे आम लोगों के लिए, क्या से क्या हो जाता है। हमारे घर के आस पास ही कहीं है ? शायद यह देश, हमारे अन्दर ही छिपा है। क्यों न इस संसार को, ढूँढ निकालें !

अगर तुम्हें यह जादुई संसार मिल जाए, तो मुझे बताओगे ना ?

वह देश, जहाँ नन्हीं राजकुमारी राज करती थी, बहुत ही निराला था। मगर एक दिन, मिथिला की गाने वाली जादुई चिड़ियाँ गायब हो गई। क्यों ? कैसे ? क्या चिड़ियाँ वापिस आई ?

मन को छू लेने वाली, एक निराली बालकथा। यह अनोखी किताब, छः से दस साल के बच्चों को हमेशा याद रहेगी।

गीता धर्मराजन ने, बच्चों के लिए तेरह पुस्तकों की रचना की है। आजकल वे बाल पत्रिका *तमाशा !* की सम्पादक हैं।

मोती कर्ण एवं सत्यनारायण लाल कर्ण बिहार की चित्रकला शैली, मधुबनी के लोक-कलाकार दम्पति हैं।

चित्रों में रंगों का जादू, कथा की कंला निर्देशक अरविन्दर चावला और पूनम जोशी ने बसाया है।




बालकथा
जल्दी कल्पना कृति

ISBN 81-85586-47-0 रु. 25